LIBRARY
Bhopal

अध्याय प्रथम

१.१ संकल्पना

परिचय - सकल्पताए जानकारी एव ज्ञान के आधार है ज्ञान को समझने के लिये इसमे निहित सकल्पनाओ को समझना आवश्यक है । कभी–कभी कुछ व्यक्ति ज्ञान को उन्ही शब्दो के माध्यम से व्यक्त करते है जिन शब्दो मे उन्होने ज्ञान प्राप्त किया है।

किसी भी प्रकार के ज्ञान को समझने के लिये उसमे निहित एव सम्बन्धित सकल्पना को समझना आवश्यक है ।

१ २ **अवधारणा** - समान विशेषताओ वाली उद्दीपनो का एक वर्ग है । ये उद्दीपन वस्तु घटना या व्यक्ति हो सकते है ।

अवधारणा एक विस्तृत शब्दावली है एव यह एक ही वस्तु की प्रस्तुति के विचार को प्रस्तुत करती है अत यह अवधारणा पर अवलबित है । अवधारणा की उत्तपप्ति प्रतिवोधन से होती है। अवधारणा तथा प्रतिबोधन ज्ञानात्मक अनुभाव के रूप है । प्रतिबोधन मे प्रत्यक्ष वस्तु एव अवधारणा मे उसका विचार या कल्पना होती है ।

जैसे मछली जीवित है प्रतिवोधन है एव क्यो जीवित है यह उसकी अवधारणा या विचार है ।

अवधारणा की परिभाषाए हेमरटन के अनुसार "अवधारणा घटनाओ, वस्तुओ और व्यक्तियो की जगत मे सामान्य विशेषताए और सम्बन्धो की प्रक्रिया है ।"

मन के अनुसार "अवधारणा तर्क के परिणाम है और एक बार विकसित हो जाने पर ये आगामी चितन मे महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करते है ।"

अवधारणा का निर्माण उसके गुणधर्म, गुणधर्म के निर्धारक गुण, गुणधर्मो की सख्या एव गुणधर्म की प्रमाणित पर निर्भर होती हे यदि किसी वस्तु जैसे सूर्य मे प्रकाश का प्रयोगी प्रभावी है तो उसकी अवधारणा प्रकाश होगी । ऐसा ही वस्तुओ के आकार, आकृति विचार के साथ सम्भव है ।

१.३ जीवन की अवधारणा-

परिचय :- यह एक रूचि का विषय होगा एव शोध का भी कि बच्चे "जीवन" शब्द से क्या समझते है उसके अनुरूप अध्ययन किया जाय । इस बात को सिद्ध करने की आवश्यकता नही है कि "**जीवन**' को और "चेतना" को एक वयस्क समझता है और बच्चे समझते है उनमे ज्यादा समानता नही है ऐसा लगता है कि कुछ अलग मामलो मे 'जीवन" शब्द से बच्चे ज्यादा ही परिचित है बजाय इन शब्दो के जैसे "**जानना**" और " महसूस करना" ।

ऐसा लगता है कि अब इसका अध्ययन पद्धति को साफ दर्शाता है, जैसा कि पहले अध्यायो मे नही था । अब बच्चो के उत्तर उचे एव तर्क शक्ति का प्रदर्शन करेगे इसके अलावा अगर, इस अध्याय के निष्कर्ष पहले वालो से मेल खाते है तो इस बात (मेल) की पूरी गारटी होगी।

अभी तक "**जीवन**" की अवधारणा के जो निष्कर्ष प्राप्त हुये है उनसे यह स्पष्ट होता है कि चार चरण जो परिभाषित किये गये है वे सम्बन्धित है चीजो को जीवित रखने वाले गुणो से । प्रथम चरण मे तो प्रत्येक चीज जीवित कहलाई जायेगी जिसमे एक किया, एक कार्य, एक उपयोग किसी तरह का हो, गुण हो ।

दूसरे चरण मे "**जीवन**" को गति द्वारा परिभाषित किया गया है जिसमे गति को कुछ हद तक स्वाभाविक माना गया है ।

तीसरे चरण मे बच्चे स्वाभाविक किया या गति को कृत्रिम किया या गति से पृथक करता है। और "**जीवन**" स्वाभाविक किया या गति से पहचाना जाता है ।

अतिम तथा चौथे चरण मे "**जीवन**" केवल पौधो एव जन्तुओ तक सीमित है ।
यह स्वाभाविक है कि बच्चे एक श्रखला मे एक विशिष्ट चरण को समर्पित है वो जरूरी नही है कि उस चरण की श्रखला से ही जो कि चेतना से सम्बन्ध रखती है को भी समर्पित है । (केवल उन बच्चे को छोडकर जो कि स्वाभाविक किया को सामान्य किया से अलग नही कर पाते है ।) इसके विपरीत प्रत्येक बच्चे की, "जीवन" और चेतना" की सोच मे काफी भिन्नताए पायी जाती है।

हमारा उद्देश्य इसलिये व्यक्तियो के सम्बन्ध के बारे मे आपस के सम्बन्ध को परिलक्षित करना नही है बल्कि वे मत या विचार जिनके द्वारा "जीवन" और "चेतना" का उदय हुआ है उनके समान्तर बातो को दिखाना है । यह बात और रूचिकर है कि जिन तथ्यो से समान्तरता की उपयोगिता सिद्ध होती है वो ये है कि उन सभी सुझावो को जो निरन्तर प्रयास करने को समर्थन देते है, बाहर रखा गया है । इस प्रकार की समान्तरता दिखाती है कि किस तरह बच्चो के विचार निरन्तर एव स्वाभाविक रहते है, बिना वयस्क वातावरण एव हमारे कठिन सवालो से प्रभावित हुये ।

हमारे शोध से विचार से सोचा जाय तो हम पाते है कि चाहे बच्चो के **"जीवन"** के बारे मे विचार **"चेतना"** की तुलना मे अधिक सुलझे हुये है, परन्तु इससे कुछ हानिया भी है । बच्चा अपने स्वाभाविक परिभाषाओ मे कुछ अन्य परिभाषाए जोड लेता है, (जैसे जीवन का अर्थ है बोलना, गर्म होना या खून होना इत्यादि) परन्तु वे सभी बच्चे जिन्होने दूसरी परिभाषाए दी, उन्होने स्वाभाविक उत्तर भी दिये जो कि लगभग साथ–साथ जुडे हुये थे इसलिये उन सभी दूसरी परिभाषाओ को नजरदज करना सम्भव हो सका ।

यह स्पष्ट है **"जीवन"** शब्द से बच्चे क्या समझते है ।

इसका मतलब है **"कुछ करना"** या "गति होना" कुछ बच्चे जीवन को वही महत्व देते है जो कि वे चेना को देते है इसके अलावा कुछ बच्चे बहुत अधिक विस्तृत अर्थ देते है ।

प्रथम चरण मे बच्चे **"जीवन"** को सामान्य गतिविधियो से जोडते है । तो दूसरे चरण मे "जीवन" को **"गति"** से जोडते है । **"जीवन"** पहले वाली श्रखला के चरण मे चेतना के साथ जो सम्बन्ध था उसी प्रकार दूसरे चरण मे बदलाव की उससे अपर वाली स्थिति है ।

हम फिलहाल यह सोचते है कि मामला और गहराता चला जा रहा है और गति रखने वाली चीजे आमतौर पर ''जीवन'' रखती है । तीन ठोस कारण इसका समर्थन करते है ।

पहला कारण गति है जो बच्चे अपनी ऑखो से देखते है ।
दूसरा कारण यह है कि जिसमे बच्चा स्वाभाविक गति और कृत्रिम गति के बीच के अन्तर को स्पष्ट कर लेता है परन्तु तीसरी अवस्था स्वाभाविक गति एव कृत्रिम गति मे अन्तर स्पष्ट किया गया है । (कुछ अपवादो को छोडकर)

तीनो ठोस कारणो को बताने वाले बच्चो की उम्र प्रथम चरण मे ६–८ दूसरे चरण मे ८–६ तथा तीसरे चरण मे ११–१२ इसके बारे मे कुछ अपवाद है कि इसके बाद ही बच्चे स्वाभाविक तथा कृत्रिम गति मे अतर स्पष्ट कर पाते है ।